प्रकाशनार्थ :

आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक '' दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पर राष्ट्रीय सेमिनार

अहिंसक एवं शांतिमय पारिवारिक जीवन की ज्यादा जरूरत : डॉ0 सिंघवी

नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2009।

कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं राज्यसभा सांसद डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि आज देश को शांति एवं सुरक्षा के लिए परमाणु शस्त्रों के साथ–साथ अहिंसक एवं शांतिमय पारिवारिक जीवन की जरूरत है। राष्ट्र में अमन एवं शांति के लिए अहिंसक मूल्यों की ज्यादा जरूरत है। इसके लिए प्रथम पाठशाला परिवार ही है, जहां अहिंसक मूल्यों का प्रभावी प्रशिक्षण दिया जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों एवं कार्यक्रमों से प्रेरणा लेकर हम एक परिवार का समुचित एवं संतुलित विकास कर सकते हैं।

डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी आज हिन्दी भवन में आचार्य महाप्रज्ञ की महत्वपूर्ण पुस्तक ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। यह समारोह अ0 भा0 तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया। समारोह आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्या साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में एवं प्रख्यात साहित्यकार, पत्रकार एवं चिंतक डॉ॰ वैद प्रताप वैदिक की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इस समारोह में पदमश्री डॉ॰ श्यामसिंह शशि, जम्मू कश्मीर के प्रख्यात लेखक डॉ॰ निजामुद्दीन एवं उदय इंडिया के संपादक श्री प्रकाश नंदा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी ने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने शांतिपूर्ण जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र देते हुए इसे परिवार की सुदृढ़ता का मूल आधार बताया है। जब परिवार में ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व नहीं होगा तब समाज, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कैसे संभव होगा। जब हम विश्वशांति और अहिंसा की स्थापना की बात करते हैं तो सबसे पहले हमें अपने परिवारों को इन संस्कारों से संस्कारित करना होगा। इस दृष्टि से आचार्य महाप्रज्ञ ने व्यापक प्रयत्न किये हैं। उन्हें और आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। डॉ0 सिंघवी ने कहा कि पिछले दस वर्षों में महिला समाज में जबरदस्त परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि कोई कानून बनाने से पहले उसका सामाजिक प्रभाव क्या होगा, इस बात का अध्ययन कर उस कानून के साथ संबंधित परिशिष्ट जुड़ना चाहिए। दहेज एवं घरेलू हिंसा आदि समस्याओं को लेकर जो कानून बने हुए है उनके दुरुपयोग की जो शिकायतें आ रही हैं उनमें सुधार एवं संशोधन की तो आवश्यकता है क्योंकि उनकी आड़ में परिवार टूट रहे हैं। कानून बनाना आसान है उसका सामाजिक प्रभाव क्या होगा इसका जब तक आंकलन नहीं होगा तब तक हम प्रभावी एवं सुखी समाज का निर्माण नहीं कर सकते। आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तक में जो विचार आचार्यश्री ने दिए हैं उन पर चलने का हम प्रयास करें।

समारोह के प्रारंभ में सुश्री चारू बांठिया ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सुमन नाहटा ने स्वागत करते हुए कहा कि हार्पर कॉलिंग्स पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' सुखद एवं सौहार्दपूर्ण जीवन की गीता है। इस पुस्तक पर हम राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कर हम परिवारों में पर रही दरारों को हम पाटना चाहते हैं। मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा के संदेश का वाचन राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या श्रीमती नीतू पटावरी ने किया।

साध्वी यशोधरा ने भगवान महावीर के सिद्धांतों की चर्चा करते हुए कहा कि शांति, अहिंसा, अनेकांत के सिद्धांतों की आज ज्यादा जरूरत है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ इन्हीं सिद्धांतों को युगीन संदर्भ देकर प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पुस्तक की चर्चा करते हुए कहा कि आज की बड़ी समस्या है परिवारों का टूटना और बिखरना। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच संदेह और अविश्वास की दीवारें बड़ी हो रही हैं, यह सामान्य सी दिखती हुई स्थिति बहुत जटिल बनती जा रही है। इन स्थितियों से निजात पाने के लिए परिवारों को अहिंसा का प्रशिक्षण देना जरूरी है। व्यक्ति और परिवार अगर स्वस्थ है तो समाज और राष्ट्र के स्वस्थ होने का सपना भी साकार हो सकता है। अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता की विजेता सुश्री सुनंदिता ने एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात पत्रकार डॉ॰ वेद प्रताप वैदिक ने आचार्य महाप्रज्ञ की परिवार विषयक पुस्तक में प्रस्फुटित विचारों की चर्चा करते हुए कहा कि यह पुस्तक बहुत उपयोगी हैं। इस पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ ने केवल अपनी बात ही नहीं कही, बल्कि विभिन्न धर्म एवं मतों के सार्वभौमिक सिद्धांतों को भी उजागर किया है। इस पुस्तक के आलोक में हम वर्तमान पारिवारिक संरचना को सुदृढ़ और सुखदायी बना सकते हैं। आज की अनेक पारिवारिक समस्याओं के समाधान इस पुस्तक से पाये जा सकते हैं। दहेज, भ्रूण हत्या, तलाक आदि पारिवारिक समस्याएं सुविधावादी और लालची मनोवृत्ति के परिणाम हैं।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

आज अहिंसा का सूर्य लोभजनित हिंसा के राहु से ग्रस्त हैं। उसका विषैला विकिरण जनचेतना को विषाक्त बनाता जा रहा है। उस पर नियंत्रण करके ही व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों को स्वस्थ बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हम सुखी तभी रह सकते हैं जब यह व्रत ले कि ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे हमें शर्मिन्दगी महसूस करनी पड़े। यह पुस्तक एक महान दार्शनिक संत ने लिखी है, मैं चाहता हूं इसका अगला भाग प्रायोगिक दृष्टि से कोई गृहस्थ लिखे।

डॉ॰ श्याम सिंह शशि ने इस पुस्तक की चर्चा करते हुए कहा कि इस पुस्तक में अध्यात्म को ही पारिवारिक शक्ति का केंद्र माना गया है। उसी शक्ति के बल को आचार्य महाप्रज्ञ आगे बढ़ा रहे हैं। अध्यात्म ही जीवन के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ धर्मनेता ही नहीं हैं, बल्कि वे मौलिक चिंतक, सुधारक एवं जीवन–निर्माता हैं। वे एक असाधारण व्यक्तित्व हैं। डॉ॰ निजामुद्दीन कहा कि मैं आचार्य श्री तुलसी और उनके अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से तेरापंथ के संपर्क में आया। प्रारंभ से ही आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया। आज के समारोह में उनकी पुस्तक पर चर्चा का होना एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इस पुस्तक से पारिवारिक वातावरण बदल सकता है, अध्यात्ममय हो सकता है। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों में सबसे बड़ा अवदान है–धर्म को विज्ञान के साथ जोड़ना। उन्होंने धर्म को संकीर्णताओं से बाहर निकालकर प्रयोग और परीक्षण के माध्यम से तेजस्वी स्वरूप प्रदान किया है। पुस्तक की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में व्यक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ की साधना की स्याही से लिखे गए विचार हैं। इन विचारों में केवल समस्याओं की चर्चा ही नहीं है, बल्कि अध्यात्म के धरातल पर उनके समाधान भी प्रस्तुत किए गए हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने अध्यात्म की अतल गहराइयों में बैठ–पैठ कर ऐसे विचार मोती परोसे हैं, जिनसे परिवार में शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण की स्थापना हो सकती है एवं व्यक्ति का संतुलित विकास संभव है।

उदय इंडिया के संपादक प्रकाश नंदा ने इस साहित्य को संस्कृति की सुरक्षा का एवं युगप्रवाह को निरंतर विकास की ओर अग्रसर करने का सशक्त माध्यम बताया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा विवेचित अनेकांत दर्शन को परिवार का सशक्त माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक आचार्य महाप्रज्ञ की साधना, बुद्धि और ज्ञान का संपूर्ण पुस्तकालय है। इस पुस्तक में व्यक्त हुए विचार अध्यात्म और विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करेंगे। इस अवसर के लिए विशेष रूप से प्रदत्त आचार्य श्री महाप्रज्ञ, युवाचार्य श्री महाश्रमण व साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के विशेष संदेश का प्रस्तुतिकरण भी किया गया। संदेश में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि परिवार एक छोटी–सी ईकाई है। वह अहिंसा की सुंदर प्रयोगस्थली बन सकती है। यदि अहिंसा का भाव परिवार में नहीं पनपता तो साथ रहने की बात ही नहीं आती। दस, बीस या पचास आदमी एक साथ रहते हैं, एक परिवार बनाकर रहते हैं, इसका अर्थ है कि उन्होंने अहिंसा का पहला प्रयोग सीख लिया। साथ में रहने का मतलब है– सह–अस्तित्व का पहला चरण। यहां से सह–अस्तित्व की बात प्रारंभ होती है। सेमिनार में साध्वी ऋजुयशा व साध्वी तरुणयशा ने एक सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। संयोजन श्रीमती सुनिता जैन व आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती सरोज जैन ने किया।

प्रेषक :

(ललित गर्ग)
ए–56/ए, प्रथम तल लाजपत नगर–द्वितीय
नई दिल्ली–110024 मो– 9811051133फोन : 41720778 41722657

फोटो विवरण

1. आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में साध्वी यशोधराजी, डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी डॉ॰ वैद प्रताप वैदिक पदमश्री डॉ॰ श्यामसिंह शशि, डॉ॰ निजामुद्दीन एवं उदय इंडिया के संपादक श्री प्रकाश नंदा।
2. आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में उपस्थित विशाल जनमेदिनी।
3. डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''दी हैप्पी एण्ड हारमोनियस फेमिली'' पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में बोलते हुए, साथ में है साध्वी यशोधराजी, डॉ॰ वैद प्रताप वैदिक पदमश्री डॉ॰ श्यामसिंह शशि, डॉ॰ निजामुद्दीन एवं उदय इंडिया के संपादक श्री प्रकाश नंदा ।
4. डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी को सम्मानित करते हुए तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती सुमन नाहटा।
5. डॉ॰ वैद प्रताप वैदिक को सम्मानित करते हुए सेमिनार संयोजक श्रीमती भारती कांठेड।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com